

बैंक जमाराशियां: अंतर्निहित समीकरण*

हाल ही में, बैंक की जमाराशियों की वृद्धि में आयी गिरावट और ऋण की बढ़ी मांग के चलते बैंकिंग प्रणाली में संरचनात्मक चलनिधि अंतराल के प्रति चिंता बढ़ गई है, यह संभवतः विमुद्रीकरण के बाद बैंक की जमाराशियों की तुलना में छोटी बचत एवं म्यूचुअल फंड के प्रतिस्थापन प्रभाव के चलते और बढ़ गया है। इस लेख में बैंक जमाराशियों को प्रभावित करने वाले चक्रीय झुकाव तथा दीर्घकालिक प्रभाव की समीक्षा की गई है। अनुभवजन्य परिणामों से पता चलता है कि आय और वित्तीय समावेशन दीर्घकालिक संरचनागत वाहक हैं जबकि ब्याज दर और सेंसेक्स प्रतिफल अल्पावधि में बैंक जमाराशियों की वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक हैं।

भूमिका

हाल की अवधि में बैंकिंग प्रणाली¹ की जमाराशियों की वृद्धि पर एक सजीव बहस देखी गई है। इस मुद्दे ने ऋण मांग बढ़ने के कारण ध्यान आकर्षित किया है जब लगातार 75 माह की गिरावट के बाद यह नवंबर 2017 में बढ़कर 9.3 प्रतिशत हो गई जो कि फरवरी 2017 में अपने न्यूनतम स्तर अर्थात् 4.4 प्रतिशत रही थी।

उधार और जमा वृद्धि के बीच बढ़े अंतराल ने बैंकिंग प्रणाली के संरचनागत चलनिधि अंतराल के प्रति चिंता बढ़ा दी है, जो वित्तीय मध्यस्थता प्रक्रिया के पहिये को जाम कर सकती है, जिसके माध्यम से उधार प्रदान करते हुए जमाराशियों को उत्पादक निवेश में परिवर्तित किया जाता है, जिससे

* यह आलेख श्री हरींद्र बेहरा और श्री दीर्घायु के रावत, आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग और श्रीमती आरती सिन्हा, सांख्यिकी और सूचना प्रबंध विभाग, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा तैयार किया गया है। इस आलेख में व्यक्त विचार लेखकों के हैं और ये विचार भारतीय रिजर्व बैंक के विचारों को प्रतिनिधित्व नहीं करता है।

¹ दि एकनॉमिक टाइम्स, 4 मई 2018: 'बैंक जमा की वृद्धि पिछले पांच दशकों में अत्यंत कम'; फैनान्सियल एक्सप्रेस, 10 सितंबर 2018: 'चिंता की बात: पिछले एक साल से बैंक जमा वृद्धि में गिरावट दर्ज'; लाईव मिंट, 10 जनवरी 2019: 'बैंक जमा वृद्धि में मंदी के बावजूद बैंक उधार वृद्धि में बढ़ोत्तरी'; फैनान्सियल एक्सप्रेस, 22 मार्च 2019, 'आपके पैसे: अब बैंक जमा निवेशकों का प्रिय न होने का कारण'

अर्थव्यवस्था का पहिया निर्बाध बनता है। हाल के बयान ने ऋण देने योग्य निधियों की कमी पर ध्यान केंद्रित किया है, इससे निधियों की लागत ऐसे समय में बढ़ गई है, जब घरेलू आर्थिक गतिविधियां अपनी गति खो रही हैं, जैसा कि मांग और उत्पादन के उच्च आवृत्ति वाले संकेतकों से संबंधित आंकड़ों से पता चलता है।

31 मार्च 2019 को अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की बकाया जमाराशियां ₹1,25,726 बिलियन रही जो कि बकाया बैंक ऋण का 128.7 प्रतिशत है (पिछले साल के 132.5 प्रतिशत से कम), जो कि जमाराशियों की कम वृद्धि के कारण वित्तीय स्थितियों को सख्त बनाने को दर्शाता है। हाल के सरोकारों के परिप्रेक्ष्य में देखें तो बैंक जमाराशियां हाउसहोल्ड की पसंदीदा वित्तीय आस्ति बनी रहीं, जो कि वैकल्पिक उच्चतम निवल लाभ (कर प्रोत्साहन समेत) युक्त वित्तीय बचत विकल्प होने के बावजूद, अर्थव्यवस्था के लिए निधियों की आपूर्ति का प्रमुख स्रोत हैं। आश्वासित लाभ, चलनिधि तथा सुरक्षा ऐसे घटक हैं जो हाउसहोल्ड के पसंदीदा वित्तीय लिखत पर निर्भर हैं। साथ ही वित्तीय समावेशन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार के निरंतर प्रयासों से अब तक बैंकिंग प्रणाली के बाहर रहे हाउसहोल्डों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली के दायरे में लाने से जमाराशियां बढ़ी हैं।

तदनुसार, इस आलेख में इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है कि: क्या छोटी बचत और म्यूचुअल फंड्स की तुलना में प्रतिस्थापन प्रभाव है अथवा क्या कोई गैर वित्तीय मध्यस्थीकरण प्रक्रिया है जो कि भारत की बैंक-प्रधान वित्तीय प्रणाली और अब तक ज्ञात वित्तीय मध्यस्थीकरण की प्रक्रिया की रूपरेखा को बदलने वाली है। विमुद्रीकरण के बाद जनता की बैंकिंग आदत में हुए परिवर्तन और बैंकों द्वारा किए गए तुलन-पत्र समायोजन करने के संदर्भ में यह प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इस लेख में उल्लेख किया गया है कि चक्रीय झुकाव को सुलझाना और हाउसहोल्ड/बैंकों के संरचनागत अथवा व्यवहारवादी परिवर्तन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये नीतियों पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं।

शेष आलेख को तीन भागों में विभाजित किया गया है। इसके तुरंत बाद भाग II में जमा व्यवहार के अंतर्निहित दीर्घावधि निर्धारिकों के अस्थायी प्रभाव को अलग करने के उद्देश्य से बैंक समूहों द्वारा जुटाई गई जमाराशियां, खातों का प्रकार और उनकी परिपक्वता अवधि तथा हाउसहोल्ड की वित्तीय बचत में वित्तीय आस्तियों के व्यवहारवादी पहलुओं पर शैली अनुरूप तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं। भाग III में अपनाई गई कार्य-प्रणाली, अध्ययन अवधि तथा अनुभवजन्य परिणाम विवरण वर्णित किए गए हैं। भाग IV में नीतिगत परिप्रेक्ष्य के साथ निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

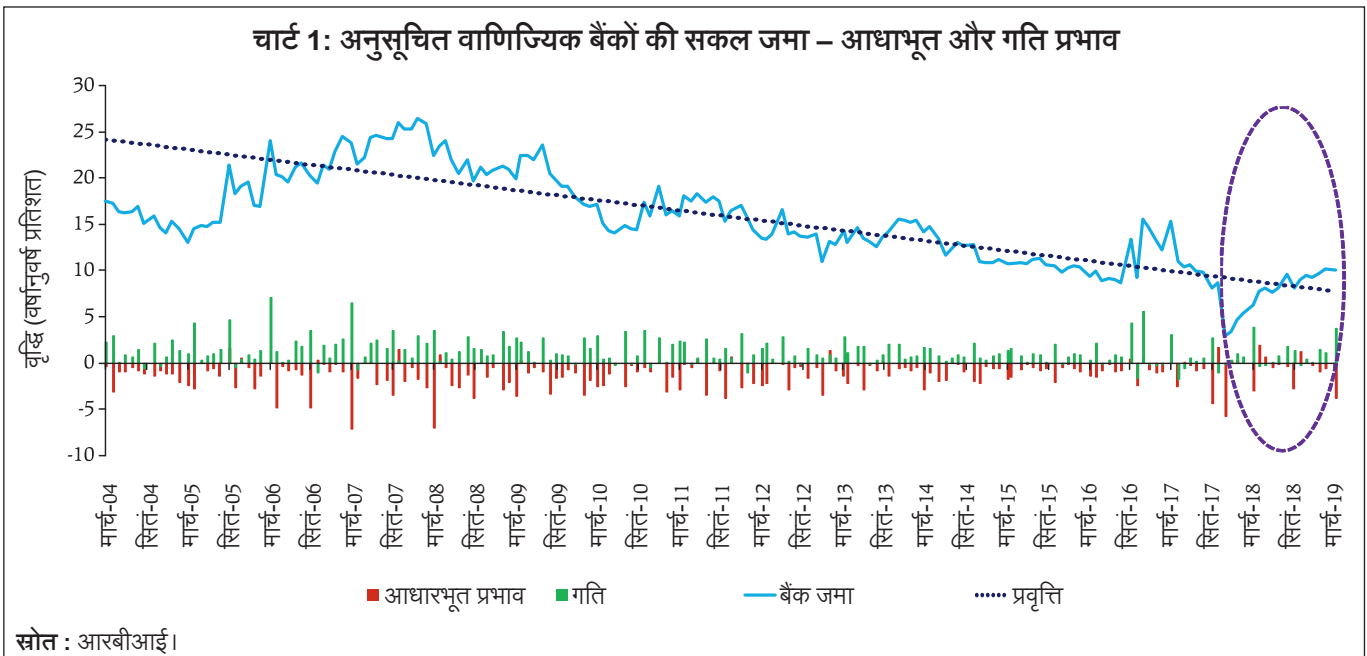
2. कुछ शैली अनुरूप तथ्य

अन्य विविध कारकों को हाल ही में मानने के बावजूद बैंकिंग साहित्य जिसमें बैंक जमा को विशेषतः जमा ब्याज दर और आय के फलन के रूप में माना जाता है। जमा संग्रहण (माशांबा ईट अल., 2014) को बढ़ाने के लिए बैंक रहित क्षेत्रों में बैंक शाखाएं प्रारंभ करने हेतु आमतौर पर बैंक शाखाओं और बैंक जमाओं के बीच सकारात्मक संबंध की पुष्टि की गई है। शेयर बाजार से प्राप्त प्रतिफल, मुद्रास्फीति और लोक भविष्य निधि (पीपीएफ) पर लागू ब्याज दर आदि मीयादी जमाओं की

वृद्धि पर नकरात्मक प्रभाव डालते हैं। (दास एवं अन्य, 2015, बेहरा और यादव, 2019)। हाल के कार्य में विमुद्रीकरण के कारण वित्तीय बचतों को पूंजी बाजार में पथांतरण किए जाने और हाउसहोल्ड्स मीयादी जमाओं की जगह बचत जमाओं का विकल्प अपनाने को वरीयता देने के कारण जमा व्यवहार में हुए परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। (सक्सेना और श्रीजित, 2018)

जमाराशियों की वृद्धि में आयी गिरावट के विपरीत, नवंबर 2017 के 3 प्रतिशत जो कि पिछले 53 साल में हुई गिरावट के बाद वर्ष 2018 के प्रारंभ में, इसमें वृद्धि होने लगी। मार्च 2019 की समाप्ति पर दर्ज 10 प्रतिशत जमा वृद्धि, वस्तुतः पिछले 15 साल की प्रवृत्ति (चार्ट 1) से मामूली अधिक रही। इसके अलावा, वर्षानुवर्ष जमावृद्धि में हुआ अपघटन यह दर्शाता है कि प्रतिकूल आधारभूत प्रभाव (लाल रंग की रेखाएं) के बावजूद हाल ही में हुई बढ़ोत्तरी उसकी गति से संचालित रही। इस उल्लेखनीय सुधार के होते हुए भी, यह नोट करने योग्य है कि नवंबर-दिसंबर 2016 के दौरान विमुद्रीकरण के कारण हुए रुकावट को छोड़कर, अगस्त 2009 से हुए दीर्घकालिक गिरावट के परिप्रेक्ष्य के बावजूद हाल में सुधार ने जोड़ पकड़ा है।

चार्ट 1: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की सकल जमा – आधाभूत और गति प्रभाव

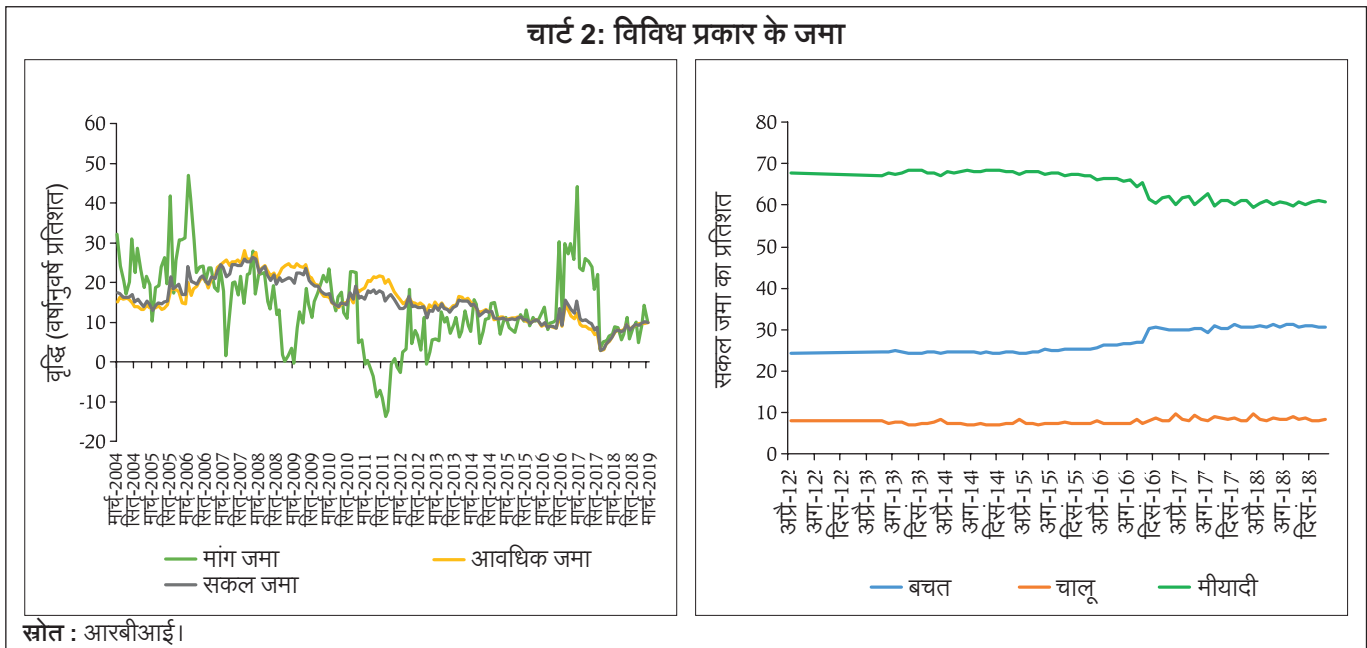


विशेष रूप से बैंकों द्वारा प्राप्त जमाराशियों को चालू, बचत और सावधि जमा² के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। बचत जमा एक संकर उत्पाद है जिसमें चालू खाता और सावधि जमा खाते की विशेषताएं मिश्रित हैं। मांग पर अदा की जाने वाली सभी जमा देयताएं यथा चालू खाता जमा तथा बचत बैंक जमाओं की मांग के घटक, मांग जमाओं के अधीन आते हैं। बैंकों की मीयादी जमाओं में सावधि जमा तथा बचत बैंक जमा की अवधि के घटक शामिल हैं। पिछले कुछ सालों से सकल जमाओं में मांग जमा का हिस्सा कम हुआ है जबकि आवधिक जमा बढ़ी हैं। आवधिक जमा, सकल जमा का लगभग 88 प्रतिशत हिस्सा थी और यह पाया गया है कि सकल जमा वृद्धि का स्वरूप प्रमुख रूप से आवधिक जमा के व्यवहार से निर्धारित किया जाता है। (चार्ट 2) दूसरी ओर, मांग जमा वृद्धि अस्थिर होती है, वर्तमान में आम जनता के पास उपलब्ध मुद्रा में हुए परिवर्तन के अनुरूप इसमें प्रतिस्थापन होता है।

बैंक समूह के अनुसार, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा संग्रहीत जमा, सकल जमाओं का प्रमुख अंश होती है। हाल ही में हुई जमा वृद्धि में निजी क्षेत्र तथा विदेशी बैंकों का योगदान रहा है, जबकि अक्टूबर 2011 में हुए संकुचन की तुलना में विदेशी बैंकों का अच्छा कार्यनिष्पादन है और निजी क्षेत्र के बैंक अधिक समुत्थानशील है, क्योंकि उनकी जमा वृद्धि में प्रगति सितंबर 2013 से हुई है। (चार्ट 3)। सभी वर्गों के बैंकों द्वारा जमा वृद्धि में समान दीर्घकालिक गिरावट दर्शायी गयी है, हालांकि निजी क्षेत्र के बैंकों के संबंध में गिरावट की प्रवृत्ति तुलनात्मक रूप से सपाट है। इस प्रकार यह देखने को मिलता है कि सकल जमा, प्रमुख रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की आवधिक जमा के व्यवहार को प्रतिबिंबित करती है।

जमा वृद्धि और ब्याज दर³ में हुए परिवर्तन में निकटतम सह उतार-चढ़ाव दिखाई देता है जैसे कि नवंबर 2017 तक घटने की प्रवृत्ति और उसके बाद बढ़ने की प्रवृत्ति (चार्ट 4)। जमा वृद्धि और सांकेतिक जीडीपी वृद्धि में हुए परिवर्तन में भी

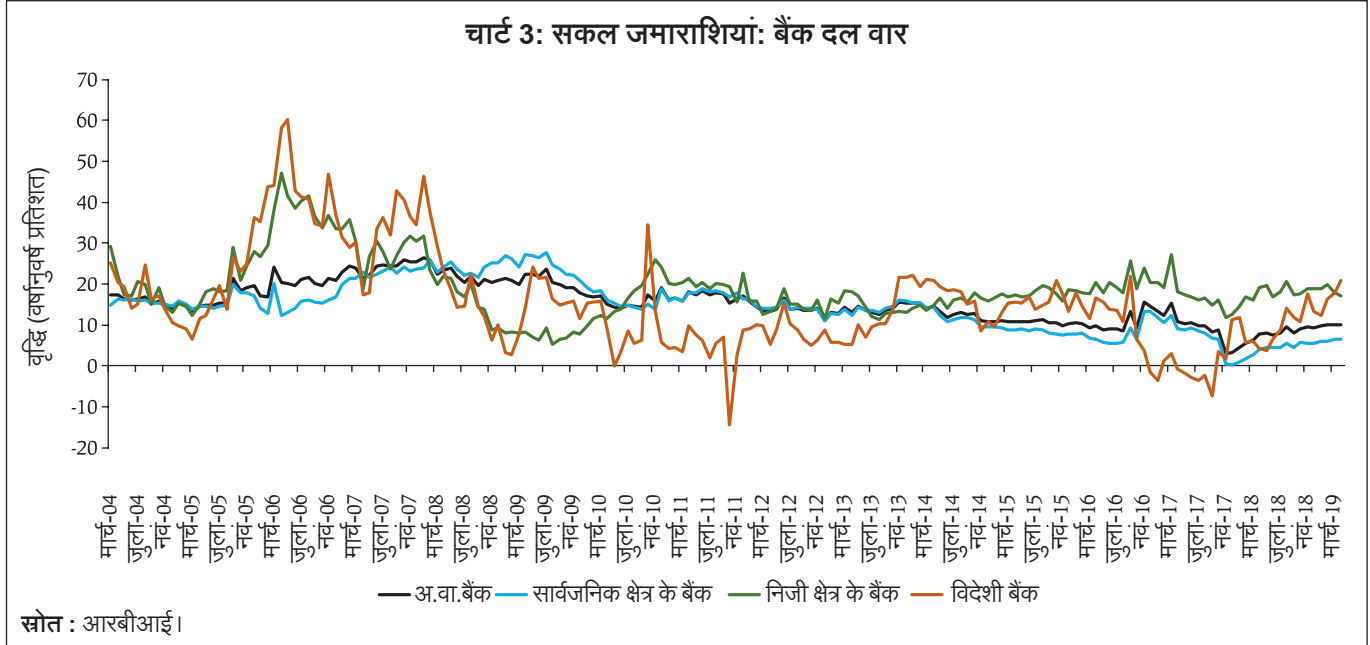
चार्ट 2: विविध प्रकार के जमा



² चालू जमाराशियों में चालू खाता की शेष राशि और मांग पर देय अन्य जमाराशियां शामिल हैं। बचत जमाराशियां किसी निर्धारित अवधि के दौरान किए गए आहरण तथा बैंक द्वारा अनुमत आहरण राशि संबंधी प्रतिबंध के अधीन है। सावधि/मीयादी जमाराशियां, किसी निर्धारित अवधि के लिए बैंक द्वारा प्राप्त जमाराशियां जो कि उस निर्धारित अवधि की समाप्ति पर आहरण करने योग्य हैं। मांग जमाराशियों में चालू जमाराशियां तथा बचत जमाराशियों की मांग का अंश शामिल हैं।

³ भारत औसत सावधि जमा दर, जिसमें भार विविध परिपक्वता अवधि की बकाया जमाराशियों पर आधारित है।

चार्ट 3: सकल जमाराशियां: बैंक दल वार



निकटतम सह उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं जैसे कि 2003-08 के दौरान बढ़ने की और उसके बाद की अवधि में घटने की प्रवृत्ति। जमावृद्धि और सांकेतिक जीडीपी की वृद्धि के सह उतार-चढ़ाव जमा ब्याज दर की वृद्धि से अधिक है, जो यह दर्शाता है कि जमावृद्धि को बढ़ाने में आय का प्रभाव, मूल्य के प्रभाव से अधिक है।

आय और ब्याज दर के अलावा, छोटी बचत से उत्पन्न दीर्घकालिक प्रभाव द्वारा जमाराशियों का संग्रहण प्रभावित हुआ, हालांकि उसी अवधि में सकारात्मक सह-संबंध रहा, इससे ब्याज दर अंतरवाली राशियों में कमी पाई गई है। दीर्घकालीन रूप में जमावृद्धि और छोटी बचत दोनों घटती गई हैं। छोटी बचत योजनाओं को उपलब्ध कराए गए आय कर प्रोत्साहन के कारण बैंक जमाओं और छोटी बचत के बीच प्रतिस्पर्धा होने लगी (अनुबंध 1)। दीर्घकालीन रूप में छोटी बचत, विशेषतः पीपीएफ पर लागू कर रियायत सीमित किए जाने पर प्रतिस्पर्धा समाप्त हो गई। पीपीएफ पर लागू कर रियायत, समय-समय पर आयकर अधिनियम की धारा 80सी के अधीन निर्धारित निवेश सीमा के अनुरूप संशोधित की जाती है। जैसे कि पहले ही उल्लेख किया गया था कि निवेशकों के लिए उपलब्ध वित्तीय बचत लिखतों का नवोन्मेषण, जिसमें सुरक्षा और प्रतिलाभ दोनों हैं, के कारण वित्तीय आस्तियों का विपथन हुआ। इसके

परिणामस्वरूप म्यूचुअल फंड्स और अन्य शेयर बाज़ार लिखतों की लोकप्रियता बढ़ी और रियल एस्टेट और स्वर्णाभूषण आदि परंपरागत विकल्प की लोकप्रियता कम हुई। इसलिए शेयर बाज़ार प्रतिलाभ और जमावृद्धि का उतार-चढ़ाव प्रतिस्थापन प्रभाव के संकेत बन गए।

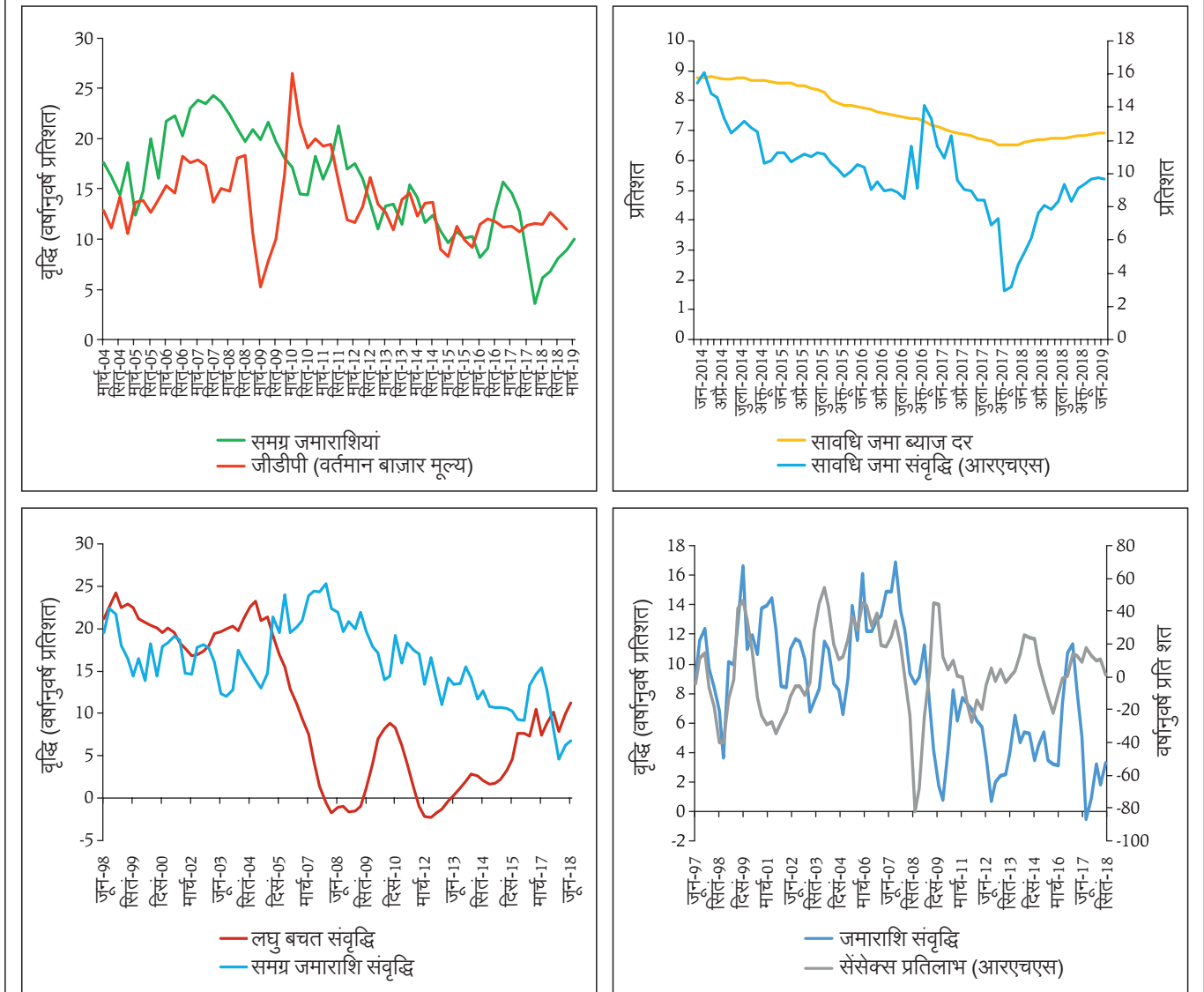
III. आंकड़े, अध्ययन अवधि, कार्य-पद्धति और परिणाम

बैंक जमाराशियों पर आंकड़े वर्ष 1951 से मासिक अंतराल पर उपलब्ध हैं, लेकिन औद्योगिक कामगारों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई – आईडब्ल्यू) जनवरी 1960 से ही उपलब्ध है। इसलिए वास्तविक जमाराशियों की श्रृंखला, बाद की तारीख को सीपीआई-आईडब्ल्यू द्वारा सांकेतिक सकल जमाराशियों को कम करते हुए परिकलित किया जा सकता है। तथापि, अन्य परिवर्ती कारक यथा छोटी बचत और बैंक शाखाएं आदि संबंधी आंकड़ों की उपलब्धता सीमित है, जो कि जून 2006 से सितंबर 2018 तक की तिमाही आंकड़ों के अध्ययन तक सीमित करता है।

समग्र जमाराशियों में वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि के पैटर्न में संरचनात्मक विराम को बाई-पेरोन जांच⁴ (बाई और पेरोन,

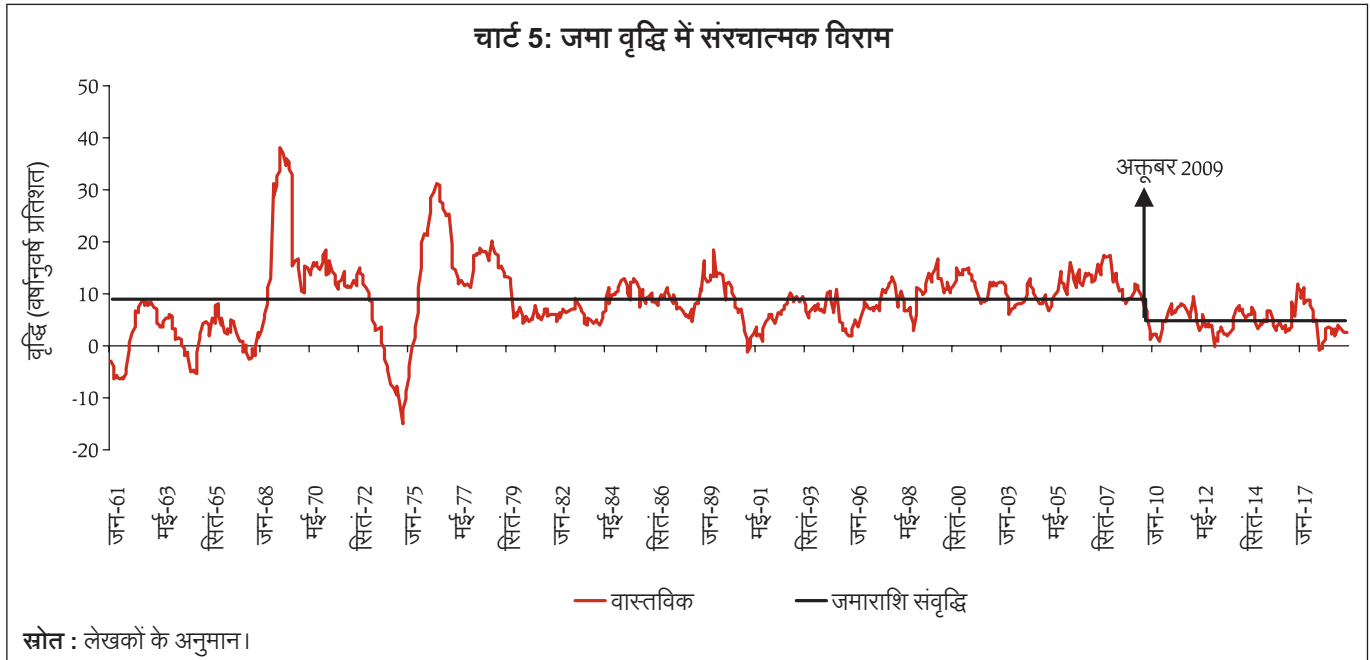
⁴ बाई-पेरोन जांच को संरचनात्मक विराम जांचों के अन्य रूपों के मुकाबले बेहतर माना जाता है क्योंकि यह अज्ञात तिथियों में होने वाले एकाधिक संरचनात्मक विरामों को चिह्नित करने में सक्षम है।

चार्ट 4: निकटस्थ सह-संचलन



1998) का उपयोग करके चिह्नित किया गया है। संवृद्धि दर के अनुसार, अक्टूबर 2009 (चार्ट 5) में जमा व्यवहार एक प्रमुख संरचनात्मक विराम से गुजरा। 2009 में विराम का रुझान जीडीपी संवृद्धि में मंदी का संकेत हो सकता है। नवम्बर 2016 में, विमुद्रीकरण से जमा संवृद्धि में क्षणिक उछाल तो उत्पन्न हुआ लेकिन आंकड़ों के नजरिए से कोई महत्वपूर्ण संरचनात्मक विराम नहीं था। इसके अलावा, जमा संवृद्धि में यह उछाल जुलाई 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण से संबंधित उछाल की तुलना में कम व्यापक थी।

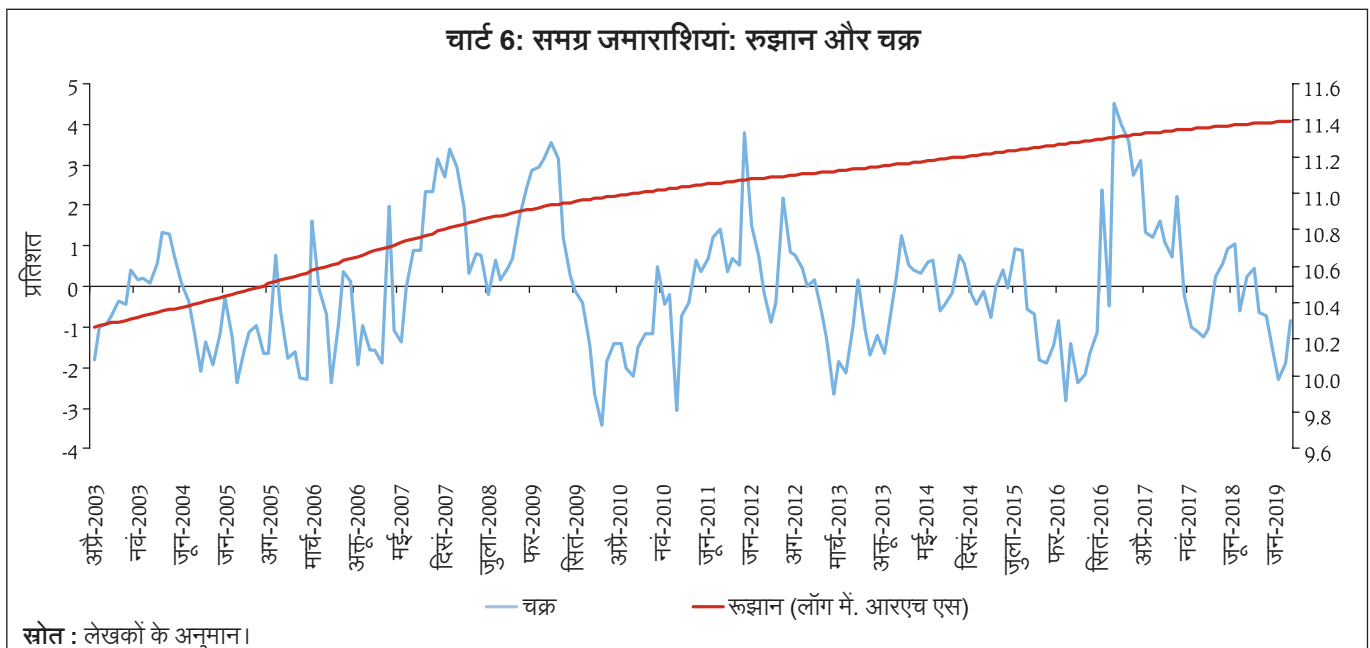
जमाराशि संवृद्धि की मंदी में अंतर्निहित दीर्घकालिक और अल्पकालिक प्रतिवर्ती कारकों के बीच अंतर करने के लिए, स्तरों में सामयिक रूप से समायोजित समग्र जमाराशियां रुझान और चक्रीय घटकों (चार्ट 6) में विघटित की जाती हैं। टर्निंग पॉइंट विश्लेषण (हार्डिंग और पगान, 2002 पर आधारित) से पता चलता है कि चक्रों की अवधि औसतन लगभग 37 महीनों की है, जिसमें नवंबर 2016 में विमुद्रीकरण के अलावा कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं है, जो संभवतः अंतर्निहित कारोबारों / आर्थिक चक्रों को दर्शाता है। तदनुसार, जमा व्यवहार



और अंतर्निहित समष्टि आर्थिक (मैक्रोइकोनॉमिक) एवं वित्तीय परिवर्तियों के साथ इनके संबंध का गहन विश्लेषण आवश्यक है।

अगले चरण में, सामयिक रूप से समायोजित (sa) जमाराशियों और निकटस्थ निर्धारक तत्वों जैसे सकल घरेलू उत्पाद (sa) के बीच दीर्घकालिक सह-एकीकृत संबंध की मौजूदगी, सावधि जमा ब्याज दर का भारित औसत, लघु

बचत (sa), और वैकल्पिक वित्तीय साधनों पर प्रतिलाभ जैसे म्यूचुअल फंड पर सेंसेक्स द्वारा अनुमानित प्रतिलाभ, और तमाम बैंक शाखाओं (sa) द्वारा किए गए वित्तीय समावेशन का पता लगाया जाता है। अक्टूबर 2009 में आया संरचनात्मक विराम और विमुद्रीकरण आघात को प्रतिरूपी परिवर्तियों द्वारा कैप्चर किया गया है। आंकड़ों के समय श्रृंखला गुणों को देखते हुए जो विश्लेषण के लिए चुने गए स्थिर और गैर-स्थिर परिवर्तियों



के संयोजन को दर्शाता है, ऑटोरिग्रेसिव डिस्ट्रिब्यूटेड-लैंग (एआरडीएल) मॉडल (पेसारन और शिन, 1998) को बैंक जमाराशियों के निकटस्थ निर्धारकों के दीर्घकालिक और अल्पकालिक गुणकों को प्राप्त करने के लिए अपनाया गया है (अनुबंध II)।

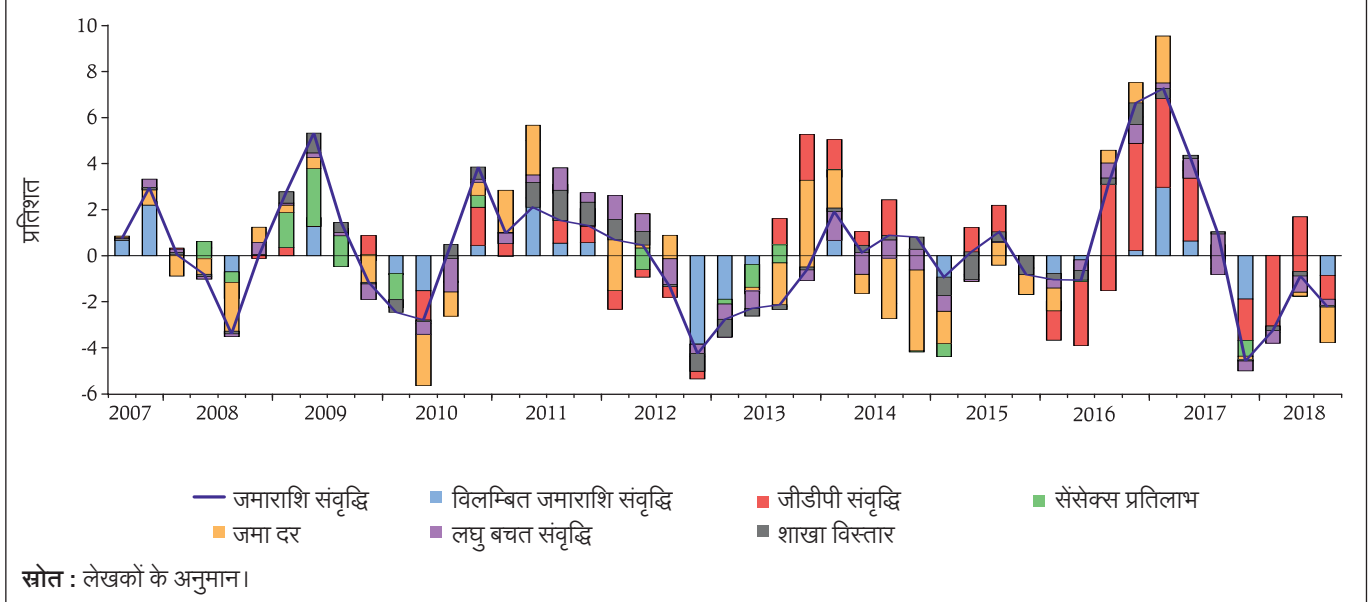
एआरडीएल मॉडल समायोजित आर-वर्ग वाले दृष्टिकोण द्वारा निर्धारित विलम्बित विस्तारमानदंड का उपयोग करता है। बाउंड्स टेस्ट के परिणाम पहले संदर्भित परिवर्तियों के बीच दीर्घकालिक संबंध होने की पुष्टि करते हैं। यद्यपि दीर्घकालिक सह-समाकलन (कोइंटीग्रेशन) जमाराशियों के दीर्घकालिक व्यवहार को स्पष्ट करने का प्रयास करता है, तथापि चक्रीय संचलनों का अध्ययन त्रुटि सुधार मॉडल (ईसीएम) के जरिए किया जा सकता है। संसेक्स प्रतिलाभ के अलावा सभी व्याख्यात्मक परिवर्तियां लम्बी अवधि में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पायीं गयीं। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को जमाराशियों के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ पाया गया और जिसे सबसे शक्तिशाली निर्धारक के रूप में देखा गया। भारतीय अर्थव्यवस्था की अत्यधिक बचत वाली प्रवृत्ति को देखते हुए जीडीपी का यह महत्व अपेक्षा के अनुरूप है। लघु बचत संग्रहण अगले सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में उभरता है जो यह संकेत करता है कि लम्बी अवधि में आय जमाराशियों और लघु बचत, दोनों को प्रभावित करती है, और लघु बचत के लिए कर में छूट पर सीमा से पारिवारिक इकाइयां अपनी आय से इन दोनों के लिए सक्षम होती हैं। वाणिज्यिक बैंक शाखाओं की संख्या में तिमाही दर तिमाही परिवर्तनों के रूप में परिभाषित बैंक शाखाएं जमा व्यवहार का तीसरा सबसे महत्वपूर्ण चालक हैं, जो दर्शाता है कि वित्तीय समावेशन का सकारात्मक प्रभाव समय के साथ बढ़ता है। भारित औसत घरेलू सावधि जमा दर को जमा संग्रहण के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ पाया गया जो ब्याज दर में थोड़ी संवेदनशीलता का संकेत है भले ही इसका प्रभाव मामूली हो। संसेक्स पर प्रतिलाभ, जो अन्य वित्तीय साधनों जैसे म्यूचुअल फंड के लिए निवेशक की प्राथमिकता को नियंत्रित करने वाली परिवर्ती है, में अपेक्षित नकारात्मक संकेत पाया गया, लेकिन गुणक सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। अक्टूबर

2009 में संरचनात्मक विराम को नियंत्रित करने के लिए ली गई प्रतिरूपी परिवर्ती (डमी वैरिएबल) सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

अल्पकालिक समीकरण में त्रुटि सुधार शब्द सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया और जिसमें अपेक्षित नकारात्मक संकेत था। त्रुटि सुधार का पैमाना बताता है कि दीर्घकालिक संतुलन के लिए किसी आघात हेतु समायोजन और प्रतिलाभ दो तिमाहियों में पूरा हो जाता है। जमाराशि संवृद्धि की आय लोच 0.85 है, जो अल्पावधि में भी सबसे प्रासंगिक निर्धारक बन जाता है। दूसरी तरफ, लघु बचत संग्रहण प्रतिस्थापन प्रभाव के साथ जमाराशि संवृद्धि को नीचे ले जाता है। अन्य निर्धारकों में, बैंक शाखा पर गुणक में सकारात्मक संकेत होता है, लेकिन यह उसके दीर्घकालिक गुणक के मुकाबले बहुत कम परिमाण का होता है, जो लंबी अवधि की घटना के रूप में जमा संग्रहण पर वित्तीय समावेशन के प्रभाव को दर्शाता है। संसेक्स प्रतिलाभों का गुणक जो लम्बी अवधि में महत्वपूर्ण नहीं होता है, वह हाल के दिनों में जमाराशियों से शेयर बाजार की आस्तियों में वित्तीय बचत के विपथन की ओर इशारा करते हुए अल्पावधि में महत्वपूर्ण है। विमुद्रीकरण के लिए उपयोग किया गया प्रतिरूप सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया जो नवंबर 2016 में निर्दिष्ट बैंक नोटों (SBNs) को परिचालन से हटाने के बाद जमाराशियों में उछाल को दर्शाता है।

अलग-अलग समय पर जमाराशि संवृद्धि के लिए विभिन्न कारकों के योगदान को समझने के लिए, एक वेक्टर ऑटोरिग्रेसन (VAR) मॉडल को अनुमानित किया जाता है जिसके लिए एआरडीएल मॉडल में पहले उपयोग की गई परिवर्तियों के वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि का उपयोग किया जाता है। सामान्यीकृत भार का उपयोग करते हुए वीएआर से जमाराशि संवृद्धि के लिए आघातों का ऐतिहासिक अपघटन इब बात का प्रमाण देता है कि जमाराशि संवृद्धि हाल के वर्षों में (विशेषकर 2013 से) मुख्य रूप से आय और जमा ब्याज दरों से संचालित होती है। लघु बचत का प्रतिस्थापन प्रभाव अक्सर पाया गया जबकि संसेक्स प्रतिलाभ कभी-कभी देखा गया (चार्ट 7)।

चार्ट 7: जमा ग्रोथ का ऐतिहासिक अपघटन



IV. निष्कर्ष

बैंक जमा पारिवारिक इकाइयों की वित्तीय बचत का एक महत्वपूर्ण भाग और बैंक ऋण के वित्तपोषण की कुंजी बने हुए हैं। दिसम्बर 2018 के बाद से हाल के महीनों में जमाराशि संवृद्धि में एक चक्रिय बढ़ोतरी हो रही है, जो अक्टूबर 2009 के बाद से चल रही मंदी के रुझान को देखते हुए उत्साहजनक है। बाद में नीतियों पर विचार आवश्यक है क्योंकि जमा संग्रहण भारत की बैंक आधारित वित्तीय मध्यस्थता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुभवजनित साक्ष्य बैंक जमा व्यवहार के बारे में कई दिलचस्प तथ्यों को उजागर करते हैं। पहला, यह अल्पकालिक और दीर्घकालिक, दोनों ही अवधि में आय को सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में रेखांकित करता है। दूसरा, जमा संग्रहण के लिए ब्याज दर मायने रखती है लेकिन केवल मार्जिन पर। तीसरा, जमा एकत्रीकरण के लिए बैंकरहित क्षेत्रों में बैंक शाखाओं के विस्तार के दीर्घकालिक सुझाव के मुकाबले वित्तीय समावेशन का उत्साहजनक प्रभाव पड़ता है। चौथा, जमाराशि संवृद्धि के लिए संसेक्स प्रतिलाभ से जुड़ा प्रतिस्थापन प्रभाव, छोटी अवधि तक ही सीमित होता है, जिसके लिए विनियामक सुधारों और कर विवाचन (टैक्स आर्बिट्राज) का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन आवश्यक है, भले ही दोनों को और अधिक बाजार निर्धारित

बनाने के लिए प्रयासों को गंभीर करना आवश्यकता हो। और अंत में, संसेक्स प्रतिलाभ की तरह, छोटी अवधि में लघु बचत बैंक जमाराशियों को प्रतिस्थापित करती है लेकिन लम्बी अवधि में जमाराशियों को अनुपूरित करते हुए यह दर्शाती है कि आयकर छूट पर सीमाएं अंततः प्रतिस्थापन प्रभाव को स्थिर करती हैं और लम्बी अवधि में दोनों के लिए आय को मुख्य निर्धारक तत्व बनाती हैं। अतएव, अंतिम विश्लेषण के रूप में अर्थव्यवस्था के विकास की दर और प्रयोज्य आय को बढ़ाना ही बैंकिंग प्रणाली के द्वारा उच्च जमा एकत्रीकरण की कुंजी है।

संदर्भ

बाई, जुशन और पियरे पेरोन (1998)। "एस्टिमेटिंग एंड टेस्टिंग लिनियर मॉडल्स विथ मल्टीपल स्ट्रक्चरल चेंजेस", इकोनोमेट्रिका, 66, 47-78

बेहरा, एच.के. और यादव, आई.एस. (2019): "एक्सप्लेनिंग इंडियाज करेंट एकाउंट डेफिसिट: ए टाइम सीरीज पर्सपेक्टिव", जर्नल ऑफ एशियन बिजनेस एंड इकोनॉमिक स्टडीज, <https://doi.org/10.1108/JABES-11-2018-0089>

दास आर., भोई बी.बी., कुमार पी. और बनर्जी के. (2015): "इंटर-सेक्टरल लिंकेजेस इन द इंडियन इकोनॉमी", भारतीय रिजर्व बैंक वर्किंग पेपर, 03/2015

हार्डिंग, डी., और पगान, ए. (2002) डिसेक्टिंग द साइकल: ए मेथोडॉलॉजिकल इन्वेस्टिगेशन. जर्नल ऑफ मोनेटरी इकोनॉमिक्स, 49(2), 365-381 doi:https://doi.org/10.1016/S0304-3932(01)00108-8

मशाम्बा टी., मैगविवा आर., और गुम्बो एल.सी. (2014), "एनालाइजिंग दि रिलेशनशिप बितविन बैंक्स डिपॉजिट इंटररेस्ट रेट एंड डिपाजिट मोबिलाइजेशन: इम्पिरिकल एविडेंस फ्रॉम जिम्बाब्वे कॉमर्शियल बैंक्स (1980-2006)" आईओएसआर जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट, 16 (1): 64-75

पेसारन, एम. एच., और शिन, वाई. (1998) एन ऑटोरिग्रेसिव डिस्ट्रिब्यूटेड-लैग मॉडलिंग अप्रोच टू कोइंटीग्रेशन एनालिसिस, कोनोमेट्रिक सोसायटी मोनोग्राफ, 31, 371-413

सक्सेना टी. के. और श्रीजीत टी. बी. (2018), "पोस्ट-डिमोनेटाइजेशन पैटर्न्स ऑफ डिपाजिट्स विथ शिड्युल्ड कॉमर्शियल बैंक्स: 2016-17 और 2017-18". भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, दिसंबर 2018

सिंह बी., बेहरा एच., राउत डी. और रॉय आई. (2017): "इम्पैक्ट ऑफ डिमोनेटाइजेशन ऑन दि फाइनेंशियल सेक्टर" भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, नवंबर 2017

अनुबंध I: बचत लिखतों पर कर उपचार			
बचत स्कीम	मूलधन	ब्याज आय	पूंजीगत लाभ
बैंक जमा			
1. बचत जमा	X	₹10000 तक	लागू नहीं
2. सावधि जमा	(≥ 5 वर्ष परिक्रमता)	X ₹40000 तक का कोई टीडीएस नहीं	लागू नहीं
डाक बचत			
1. बचत जमा	X	₹10000 तक	लागू नहीं
2. सावधि जमा	(≥ 5 वर्ष परिक्रमता)	X	
पीपीएफ			
एनएससी			
केवीपी	X	X	
सुकन्या			
एनपीएस			40% की सीमा तक कर योग्य
म्यूचुअल फंड			
दीर्घावधि			
इक्विटी/संकर (>1 साल)	(3 साल लॉक इन सहित ईएलएसएस)		₹1 लाख के बाद 10% टैक्स
ऋण (> 3 साल)	X		X (एलटीसीजी 20%)
अल्पावधि			
इक्विटी/संकर (<1 साल)	X		X (एसटीसीजी 15%)
ऋण (<3 साल) एमएमएमएफ सहित	X		X
√ : कर छूट/ प्रोत्साहन ईएलएसएस: इक्विटी-लिंकड बचत योजना सुकन्या : सुकन्या समृद्धि खाता	X: कोई कर छूट/प्रोत्साहन नहीं एलटीसीजी: दीर्घावधि पूंजीगत लाभ कर	NA: लागू नहीं एसटीसीजी: अल्पावधि पूंजीगत लाभ कर	

अनुबंध II: प्रायोगसिद्ध परिणाम

एआरडीएल मॉडल

एआरडीएल रिग्रेशन का आकलन, पेसारन और शीन (1998) द्वारा यथा प्रस्तावित ति2: 2006 से ति3: 2018 के डेटा का उपयोग करके किया गया है।

$$\Delta deposit_t = \psi(deposit_{t-1} - \beta' x_t) + \sum_{i=1}^{p-1} \alpha_i^* \Delta deposit_{t-i} + \sum_{j=0}^{q-1} \delta_j^* \Delta x_{t-j} + \varepsilon_t$$

जहां जमा, मौसमी रूप से समायोजित वास्तविक सकल जमाओं का नैसर्गिक लघुगणक है और ψ त्रुटि संशोधन पद है, विवरणात्मक चरों का वेक्टर जैसे: X_t जीडीपी, जमा दर, सेंसेक्स विवरणियां, लघु बचत संग्रह और बैंक शाखाएं। सभी चर वास्तविक अवधि के हैं।

एआरडीएल मॉडल आकलन परिणाम

परिवर्ती	(अवधि: ति2:2006 से ति3:2018)	
	गुणांक	टी आँकड़े
दीर्घावधि		
त्रुटि संशोधन पद	-0.709	-8.48***
स्थिर	-4.976	-2.80***
जीडीपी	0.958	10.99***
जमा-दर	0.005	1.98*
डीसेंसेक्स	-0.0002	-1.38
लघु-बचत	0.452	3.65***
डीब्रांच	0.066	3.31***
डी2009ति4	0.076	3.45***
अल्पावधि		
डी(एडी)	-0.363	-3.25***
डी(जीडीपी)	0.847	5.01***
डी(जीडीपी(-1))	-0.536	-3.08***
डी(डीसेंसेक्स)	-0.0003	-4.22***
डी(लघु-बचत)	0.225	1.74*
डी(लघु-बचत(-1))	0.052	0.36
डी(लघु-बचत(-2))	-0.588	-4.06***
डी(डीब्रांच)	0.001	2.33**
डीमोन	0.045	5.68***
एडीजे आर ²	0.78	
डी-डब्ल्यू आंकड़े	2.47	
एलएम(8)-पी-वैल्यू	0.14	
एआरसीएच(8)-पी- वैल्यू	0.88	

- एडी : मौसमी रूप से समायोजित वास्तविक सकल जमा
- जीडीपी : मौसमी रूप से समायोजित वास्तविक सकल देशी उत्पाद
- जमा दर : भारत औसत सावधि जमा दर
- डीसेंसेक्स : समय 'टी' और समय 'टी -1' के बीच सेंसेक्स में त्रैमासिक अंतर
- लघु-बचत : मौसमी रूप से समायोजित वास्तविक लघु बचत संग्रहण का नैसर्गिक लघुगणक
- डीब्रांच : बैंक शाखाओं में त्रैमासिक वृद्धि
- डी2009ति4 : अक्टूबर 2009 में संरचनात्मक ब्रेक के लिए डमी
- डीमोन : विमुद्रीकरण के लिए डमी

नोट : ***, **, * क्रमशः 1 प्रतिशत, 5 प्रतिशत और 10 प्रतिशत पर सांख्यिकीय महत्व के स्तर को दर्शाता है।

स्रोत : लेखक का अनुमान/गणना।

सीमा परीक्षण परिणाम

एफ- सीमा परीक्षण	शून्य परिकल्पना: किसी स्तर पर कोई संबंध नहीं			
जांच आंकड़े	मूल्य	संकेत	आई(0)	आई(1)
एफ- आंकड़े	8.88	10%	1.99	2.94
के	6	5%	2.27	3.28
		2.50%	2.55	3.61
		1%	2.88	3.99

संरचनात्मक ब्रेक जांच परिणाम

आश्रित चर : जमा वृद्धि

नमूना(समायोजित) : 1961एम01 2019एम03

सम्मिलित अवलोकन : 699 समायोजन के उपरांत

ब्रेक टाइप : बाई-पेरोन जांच का एल+1 बनाम एल क्रमिक रूप से ब्रेक का निर्धारण

ब्रेक : 2009एम09

चयन: ट्रिमिंग 0.15, सिग.लेवल 0.05

चर	गुणांक	मानक त्रुटि	टी-आंकड़े	प्रायिकता
	1961एम01 - 2009एम09 -- 585 अवलोकन			
सी	8.96	0.75	12.00	0.00
	2009एम10 - 2019एम03 -- 114 अवलोकन			
सी	4.60	0.52	8.86	0.00